

सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिम्रिती  
पेखे सरब ढढोलि ॥  
पूजसि नाही हरि हरे  
नानक नाम अमोल ॥१॥

असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥  
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥  
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥  
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥  
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥  
पुंन दान होमे बहु रतना ॥  
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥  
वरत नेम करै बहु भाती ॥  
नही तुलि राम नाम बीचार ॥  
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार  
॥१॥

नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥  
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥  
अगनि माहि होमत परान ॥  
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥  
निउली करम करै बहु आसन ॥  
जैन मारग संजम अति साधन ॥  
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥  
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥  
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥  
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि  
॥२॥

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥  
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥  
सोच करै दिनसु अरु राति ॥  
मन की मैलु न तन ते जाति ॥  
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥  
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥  
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥  
सुध कहा होइ काची भीति ॥  
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥  
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच  
॥३॥

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥  
अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥  
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥  
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥  
छूटसि नाही ऊभ पड़आलि ॥  
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥  
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥  
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥  
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥  
नानक बोलै सहजि सुभाइ

॥४॥

चारि पदारथ जे को मागै ॥  
साध जना की सेवा लागै ॥  
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥  
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥  
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥  
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥  
जे को जनम मरण ते डरै ॥  
साध जना की सरनी परै ॥  
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥  
नानक ता कै बलि बलि जासा  
॥५॥

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥  
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥  
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥  
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥  
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥  
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥  
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥  
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥  
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥  
नानक पाप पुंन नही लेपा  
॥६॥

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥  
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥  
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥  
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥  
करन करावनहार सुआमी ॥  
सगल घटा के अंतरजामी ॥  
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥  
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥  
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥  
नानक अवरु न जानसि कोइ

॥७॥



सख धरम महि सेसट धरमु ॥  
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥  
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥  
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥  
सगल उदम महि उदमु भला ॥  
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥  
सगल बानी महि अम्रिंत बानी ॥  
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥  
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥  
नानक जिह घटि वसै हरि नामु  
॥८॥३॥